8

यीशु की सेवकाई का आरम्भ

(4:12–25)

शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा लिए जाने के बाद (4:1–11) परन्तु हेरोदेस अन्तिपास द्वारा यूहन्ना को जेल में डाले जाने से पहले (4:12; देखें 14:3–5), यीशु अपनी सेवकाई में लग गया था जिसका वर्णन यूहन्ना 1:19–3:36 में है। मरकुस और लूका के साथ मत्ती ने भी इस समय पर ध्यान नहीं दिया गया।

यह भाग (4:12–25) यीशु की सेवकाई के परिचय का काम करता है और पहाड़ी उपदेश तक ले जाता है (5:1–7:29)। मत्ती ने पवित्र शास्त्र के पूरा होने के रूप में कफ़रनहूम में यीशु के काम करने की तस्वीर (4:12–17), अपने चार चेलों को बुलाने (4:18–22) और उसकी सेवकाई का सारांश और इससे प्रभावित होने वाले इलाकों को बताया (4:23–25)।

कफरनहूम में रहना (4:12-17)

[12]जब उस ने यह सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। [13]और नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नप्ताली के देश में है जाकर रहने लगा। [14]ताकि जो यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।

> **[15]कि जबूलून और नप्ताली के देश, झील के मार्ग से यरदन के पार अन्यजातियों का गलील।**
> **[16]जो लोग अन्धकार में बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी, और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।**

[17]उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।

आयत 12. मसीह की सेवकाई में यहां पर चाहे **यूहन्ना पकड़वा दिया गया** पर मत्ती ने उस कारावास के विवरण को 14:1–12 से पहले नहीं बताया। यूहन्ना की गिरफ़्तारी की बात **सुनने** पर **यीशु गलील को चला गया**। इस जाने का सही सही कारण नहीं दिया गया। क्रिया शब्द ''गया'' का अनुवाद खतरनाक परिस्थितियों से बचने के इरादे को दिखाने के लिए मत्ती में ''जा'' या ''गया'' बार–बार हुआ है (2:12–14, 22; 12:15; 14:13; 15:21)। यहां पर क्या यूहन्ना की सेवकाई से जुड़े लोगों को अपने आपको उस क्षेत्र से दूर रखना आवश्यक था, जहां

वह प्रचार करता था? सम्भवतया नहीं। क्योंकि हेरोदेस अन्तिपास जिसने पिरिया (यरदन के पास) यूहन्ना को गिरफ़्तार किया था उसका शासन गलील में भी था जहां यीशु गया। जैसा कि लियोन मौरिस का अवलोकन है कि "यह अधिक सम्भावना है कि यूहन्ना की सेवकाई पर यीशु ने देखा कि अब उसकी अपनी सेवकाई के आरम्भ होने का समय है; यूहन्ना ने जहां अपना काम जंगल में किया वहीं यीशु ने अपना काम गलील के लोगों में अधिकतर करना था।"[1]

यीशु ने अपनी सेवकाई के मुख्य केन्द्र के रूप में यहूदिया और पवित्र नगर यरूशलेम के बजाय इस इलाके को चुना। यहूदिया के लोग आम तौर पर अपने गलीली भाइयों को पिछड़े हुए और अशिक्षित मानते थे (26:69, 73; यूहन्ना 7:41, 52; प्रेरितों 2:7; 4:13)। तौभी परमेश्वर आम तौर पर "जगत के मूर्खों को" चुनता है "कि ज्ञानवानों को लज्जित करे" (1 कुरिन्थियों 1:27)।

आयत 13. यीशु **नासरत** में लौट गया जहां उसका गृहनगर था (2:23)। परन्तु थोड़ी देर बाद वह शायद लोगों द्वारा ठुकराए जाने (लूका 4:16–31)[2] के कारण वहां से चला गया और उसने अपने काम का केन्द्र **कफरनहूम में जो झील के किनारे** है में बना लिया। इस नगर को बाद में उसके "अपने नगर" (9:1) के रूप में बताया गया। यह मूल में **जबलून और नप्ताली** के गोत्रों को दिए गए इलाके में आता था।

कफ़रनहूम के लिए सबसे तर्कसंगत स्थान गलील की झील के उत्तर पश्चिमी सिरे पर टेल हूम नामक स्थान है। 1905 में फ्रांसिस्की लोगों (असीसी के फ्रांसिस को मानने वाले) इस जगह की अच्छे से खुदाई करके विश्वास दिलाने वाला प्रमाण दिया कि वास्तव में यह स्थान प्राचीन कफरनहूम का था। नाम "कफरनहूम" का अर्थ है "नहूम का गांव" और यह पुराने नियम के उस नबी का घर हो सकता है। "नहूम" का अर्थ है "तरस खाना।" यह हो सकता है कि यह नाम उस गांव को बेसहारा लोगों की देखभाल किए जाने के कारण दिया गया हो।

कफरनहूम यीशु के प्रचार करने और सिखाने का केन्द्र बन गया। यह गलील की झील के किनारे था और इसे किन्नेरेत नामक ताल (गिनती 34:11), गन्नेसरत की झील (लूका 5:1) और तिबिरियास झील (यूहन्ना 21:1) भी कहा जाता है। यह झील बहुत बड़ी नहीं थी। आज यह उत्तर से दक्षिण तक लगभग 13 मील लम्बी और पूर्व से पश्चिम तक आठ मील चौड़ी है। यह समुद्रतल से लगभग सात सौ फुट नीचे है। इसके तटों पर फलस्तीन के कई मुख्य जनसंख्या केन्द्र थे। इसके किनारों के साथ साथ नौ घनी आबादी वाले नगर थे जिनमें से आज केवल तिबिरियास बचा है।

आयत 14. मत्ती संकेत देता है कि यीशु का कफरनहूम में जाना कोई संयोग नहीं था, बल्कि इसलिए था **ताकि जो यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।** मत्ती ने अगली कुछ आयतों में जिस भविष्यवाणी की बात की है वह यशायाह 9:1, 2 से ली गई है।

आयत 15. कफरनहूम में महत्वपूर्ण सड़कें पाई जाती थीं। इस नगर में सीरिया से मिस्र को जाने वाला प्रमुख व्यापार मार्ग था जिसे **झील का मार्ग** कहा जाता था (यशायाह 9:1)। गलील की बात अधिक विशेष अर्थ में करते हुए, डोनल्ड ए. हैग्नर ने टिप्पणी की है:

> "झील का मार्ग" ... यीशु की सेवकाई के प्रमुख नगरों बेतसैदा और कफरनहूम के

बीच में से गलील की झील के पश्चिमी किनारे के पास पास जाती भूमध्य तट पर दमिश्क के साथ कैसरिया को जोड़ने वाली रोमी सड़क (वाया मैरिस) थी।[3]

कफरनहूम फलस्तीन के सबसे घनी आबादी वाले भाग में भी था। यहूदी इतिहासकार जोसेफस जो गलील का हाकिम था ने लिखा कि उस इलाके में 240 गांव और नगर थे, जिनमें से किसी की आबादी पन्द्रह हज़ार से कम नहीं थी।[4]

गलील की आबादी बहुराष्ट्रीय थी। इसे **अन्यजातियों का गलील** कहा जाता था (यशायाह 9:1), क्योंकि इसमें आठवीं शताब्दी से दूसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व तक अधिकतर आबादी अन्यजातियों की थी और यह उन्हीं के अधीन रहता था और इसके आस पास अन्यजातियों के देश भी थे। सीरिया उत्तर और पूर्व तक था जिसमें पश्चिम तक फिनीके की सन्तान थी और दक्षिण तक सामरी लोग थे। पहले गलील में अन्यजातियों की घुसपैठ हुई थी जब सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को बीस गलीली नगर दे दिए थे (1 राजाओं 9:11)। इसके अलावा इस्राएलियों ने जिन्हें यह इलाका दिया गया था पूरी तरह से इस देश में रहने वाले काफ़िरों को निकाला नहीं था (न्यायियों 1:30, 33)। गलील इन लोगों विभिन्न प्रकार के रीति रिवाजों और संस्कृतियों से इतना प्रभावित था जितना फलस्तीन का और भाग नहीं। जोसेफस ने कहा कि ''वे नई नई बातों को पसन्द करते और स्वभाव से ही बदलाव की सोच वाले थे और विद्रोह में खुश रहते थे।''[5]

आयत 16. दोहराई गई भविष्यवाणी (यशायाह 9:2) उस समय का दृश्य था जब इस इलाके पर अश्शूरियों द्वारा लूटकर आत्मिक **अंधकार** में डाला गया था उसने अब परमेश्वर की सच्चाई की तेज़ **ज्योति** को देखा था। नबी ने दावा किया कि यह ज्योति जो संसार में आने वाली थी पहले यहूदा या यरूशलेम में चमकनी थी, परन्तु पहले अन्धकार के इस इलाके में दिखाई देनी थी। शब्द ''अन्धकार'' आत्मिक अन्धेपन, नैतिक गिरावट या निराशाजनक निराशा को दर्शाता है। इसके विपरीत ''ज्योति'' आत्मिक समझ या ज्ञान या नैतिकता भरे जीवन और आनन्द का संकेत है। इस इलाके में यीशु के आने से अन्धकार का वह पर्दा हट जाना था जो इसके ऊपर लटका हुआ था और इसने सच्चाई के बड़ी ज्योति से चमकना था। यीशु ने स्वयं ''ज्योति'' होना था (यूहन्ना 1:4, 8, 9; 3:19; 8:12; 12:46)।

लोग जिनके पास यीशु आया वे यहूदी थे। मत्ती ने उनकी राष्ट्रीयता की पहचान के लिए बार बार इस यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया (1:21; 2:4, 6; 4:23; 9:35; 13:15; 15:8; 21:23; 26:3, 5, 47; 27:1, 25, 64)। यीशु की सेवकाई ''इस्राएल की खोई हुई भेडों'' पर केन्द्रित है (10:6; 15:24)। यह तथ्य कि यह यहूदी लोग ''अन्यजातियों के गलील'' में रहते थे सुसमाचार के संदेश के विश्वव्यापी होने का पूर्वाभास था, जो ''सब जातियों'' के लिए है (28:19; 1:3; 2:1 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 17. उस समय से यीशु की गतिविधियों के नये चरण की ओर संकेत है। **यीशु ने प्रचार करना आरम्भ किया** वाक्यांश यह सुझाव नहीं देता कि वह अपने बपतिसमे और यूहन्ना की कैद के समय के बीच में प्रचार नहीं कर रहा था, क्योंकि लूका कहता है कि वह गलील के अन्य भागों में प्रचार और सेवकाई कर रहा था (लूका 4:14, 15)। मरकुस 1:14 लिखता है कि ''यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार

प्रचार किया।'' मत्ती का वाक्यांश ''प्रचार करना आरम्भ किया'' का अर्थ है कि यीशु उन इलाकों में गया जहां यूहन्ना ने पहले प्रचार नहीं किया था। यह पहले भाग की अपनी सेवकाई के दौरान उसकी आम शिक्षा के संक्षिप्त कथन का काम करता है।

यीशु लोगों को **मन फिराने** के लिए कहता था, जो ऐसा शब्द है जो मन के बदलने का संकेत देता है जिससे जीवन बदल जाए। लोगों को मन फिराना आवश्यक है। **स्वर्ग का राज्य निकट आया** [था]। राज्य उस समय आया नहीं था पर इसका आना निकट था। उनके लिए जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के इच्छुक हैं मन फिराना बिल्कुल आवश्यक है (लूका 13:3, 5; प्रेरितों 2:38; 17:30)। जैक पी. लुईस ने टिप्पणी की है, ''इस मामले में यीशु के प्रचार का संदेश यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा की गई पहली घोषणा को आगे बढ़ाता है (मत्ती 3:2) और बाद में अपने चेलों द्वारा घोषणा करता है (मत्ती 10:7)।''[6]

आरम्भिक चेलों को बुलाना (4:18-22)

[18]गलील की झील के किनारे फिरते हुए उसने दो भाइयों अर्थात शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा। क्योंकि वे मछवे थे। [19]और यीशु ने कहा, ''मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।'' [20]वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। [21]वहां से आगे बढ़कर, उसने और दो भाइयों, अर्थात जब्दी के पुत्र याकूब और उस के भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा। और उन्हें भी बुलाया। [22]वे तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

मत्ती का यह विवरण बताता है कि यीशु ने अपने पहले चार चेलों का चयन कैसे किया। दो दो भाइयों की जोड़ियों को यीशु के बुलाने की मिलती जुलती कहानियां दी गई हैं: पतरस और अन्द्रियास (4:18-20) और याकूब और यूहन्ना (4:21, 22)। कहानियों में वही बातें पाई जाती हैं: (1) यीशु का आगे बढ़ना, (2) भाइयों को उसका देखना, (3) उनकी मछली पकड़ने की गतिविधि, (4) चेले बनने के लिए यीशु का निमन्त्रण, और (5) चेलों का जवाब।[7]

इन में से कम से कम दो को यीशु पहली बार नहीं मिला था। फिलिप्पुस और नतनएल के साथ पतरस और अन्द्रियास उसके बपतिस्मे के बाद गलील में उसके लौटने के समय उसके साथ थे (यूहन्ना 1:35-45)। उस वचन में बताए कम से कम चार चेले काना गलील में यीशु के अपना पहला आश्चर्यकर्म करने के समय उसके साथ थे (यूहन्ना 2:1, 2)।

चेला उसका जिसके वह पीछे चलता है ''अनुयायी'' या ''छात्र'' होता है। यहूदियों में छात्रों के गुरु की तलाश करना तो आम बात था,[8] पर गुरु का यीशु की तरह चेलों को ढूंढ़ना आम नहीं (यूहन्ना 15:16)।[9] अपनी सेवकाई के आरम्भिक भाग के दौरान यीशु के कई चेले थे, लोगों की भीड़ उसके पीछे जाती थी। उस समय उसने उनमें से सत्तर को उन कुछ यहूदी नगरों में जहां उसकी जाने की योजना थी रास्ता तैयार करने के लिए ''सीमित आज्ञा'' देकर भेजा था (लूका 10:1)। यहीं पर, चेलों के इस बड़े समूह से यीशु ने बारह पुरुषों को चुना जो उसके प्रेरित बने (लूका 6:13-16; देखें मत्ती 10:1-4)। उसने उन्हें ''प्रेरित'' कहा, क्योंकि उसने उन्हें चुना,

आज्ञा दी और अपनी ओर से काम करने का अधिकार देकर भेजा था। ये बारह पुरुष जिन्हें यीशु ने चुना था उसकी गवाही देने के लिए उसके व्यक्तिगत राजदूत बन गए (प्रेरितों 1:8)। 4:18-22 में यीशु द्वारा बुलाए गए चार चेले उसके सबसे निकटतम प्रेरित बन गए (17:1; 26:37; मरकुस 5:37; 13:3)।

आयत 18. उस (यीशु) ने **शमौन** उसके भाई **अन्द्रियास** को देखा तब वे मछलियां पकड़ रहे थे। उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले **जाल** गोलाकार में होंगे और उन्हें सिक्के की गोलियों लगाकर भारी किया गया होगा।[10] ये लोग याकूब और यूहन्ना और उनके पिता जबदी के साथ मछलियां पकड़ने का कारोबार करते थे (मरकुस 1:20; लूका 5:7, 10)। शमौन और अन्द्रियास मूल रूप में बैतसैदा के रहने वाले थे (यूहन्ना 1:44), परन्तु हाल ही में उन्होंने कफरनहूम में अपना ठिकाना बना लिया था (8:5, 14; मरकुस 1:21, 29; लूका 4:31, 38)।

यीशु ने शमौन का नाम ''कैफा'' (अरामी भाषा) या **पतरस** (यूनानी) रखा जिसका अर्थ है ''एक पत्थर'' (यूहन्ना 1:42)। उसे ''आशावान, निडर, विश्वासपात्र, आत्मविश्वासपूर्ण, उत्साही, मज़बूत, प्रेम करने वाले और क्रूसारोहण से पूर्व उसके कर्त्तव्य न निभाने को छोड़कर अपने प्रभु के वफ़ादार'' के रूप में दिखाया जा सकता है।''[11]

''अन्द्रियास'' एक यूनानी नाम है जिसका अर्थ है ''साहसी'' या ''निर्भीक।'' वह बारह में से मसीह का अनुयायी बनने वाला पहला व्यक्ति लगता है (यूहन्ना 1:40)। यीशु से उसका परिचय होते ही वह अपने भाई शमौन को ढूंढ़ने चला गया और उसे मसीह के पास ले आया (यूहन्ना 1:41, 42)। उसे बार बार केवल ''शमौन पतरस का भाई'' के रूप में बताया गया है (यूहन्ना 1:40; 6:8; देखें मत्ती 10:2; लूका 6:14), परन्तु वह पतरस के अलावा यीशु के पास और लोगों को लाने के लिए प्रसिद्ध है (यूहन्ना 6:8, 9; 12:20-22)। अन्द्रियास की पहचान आशावादी और निस्वार्थ व्यक्ति के रूप में होती है।

आयत 19. पतरस और अन्द्रियास को यीशु का कहना था कि **''मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।''** यूनानी भाषा में अनुवाद शब्द ''पीछे चले आओ'' क्रिया विशेषण का स्थान है जिसमें कठोर आज्ञा का प्रभाव है। ''मेरे पीछे चले आओ'' वाक्यांश का अनुवाद ''मेरे पीछे हो लो'' भी हो सकता है। यह मूल में छात्रों को अपने रब्बियों से सीखने के लिए एक से दूसरे स्थान में जाने के लिए उनके पीछे आने के लिए आम था। ''मैं बनाऊंगा'' संकेत देता है कि यीशु ने उन्हें उनके आने वाले मिशन के लिए तैयार करना था।

ये भाई मछलियों के पकड़ने वाले थे, परन्तु उन्हें ''मनुष्यों के पकड़ने वाले'' बनना था। लूका ने कुछ विवरण जोड़ा है कि उसी अवसर पर क्या होता (लूका 5:1-11)। मछलियों के अद्भुत ढंग से एक बार इतनी पकड़ी जाने पर कि उनकी नावें डूबने लगी थीं, यीशु ने शमौन से कहा, ''मत डर अब से तू मनुष्यों को जीवित पकड़ा करेगा'' (लूका 5:10)। मनुष्यों को पकड़ने के रूपक की जड़ें पुराने नियम में हैं जहां लोगों का इकट्ठा होना न्याय के लिए होता है (यिर्मयाह 16:16; आमोस 4:2; हबक्कूक 1:14-17)। नये नियम में यह आकृति परमेश्वर के राज्य में लोगों को लाते हुए उद्धार की है। 13:47 वाला दृष्टांत सुसमाचार के जाल के फैलने और मसीह के लिए जहां तक हो सके लोगों को पकड़ने का संदेश देता है।[12] एक टीकाकार ने कहा है, ''यह झील में से मछलियां पकड़ने का सवाल नहीं है, बल्कि परमेश्वर के बड़े जाल

में पकड़कर लोगों को पाप और मृत्यु के अथाह कुण्ड में से निकालना है!''[13] ग्रेट कमीशन जो पहले प्रेरितों को दिया गया था, परन्तु ''जगत के अन्त तक'' (28:20) उसके अनुयायियों के लिए था, यीशु ने स्पष्ट किया कि उसकी यह इच्छा उसके सब चेलों के लिए है।

आयत 20. पतरस और अन्द्रियास का प्रभु की बुलाहट को जवाब तुरन्त मिला। मत्ती कहता है कि **वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए**। 4:18 के विशेष शब्द के विपरीत, इस आयत में अनुवाद हुआ यूनानी शब्द ''जालों'' अधिक स्पष्ट है और यह अपने आप में कई अलग-अलग किस्मों को समा लेता है।

लूका 5:11 कहता है कि वे सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए। बाद में पतरस ने उस बलिदान के बारे में बताया जो उन्होंने ''सब कुछ'' शब्द के साथ दिया। ''देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए; तो हमें क्या मिलेगा?'' (19:27)। यीशु ने चेलों को फिर से आश्वस्त किया कि आशिषें उन से कहीं बढ़कर होंगी जो उन्होंने उसके चेले बनने के लिए त्यागा था (19:28-30)।

आयतें 21, 22. जब यीशु **याकूब** और **यूहन्ना** के पास आया तब ये **भाई अपने पिता के साथ नाव पर अपने जालों को सुधार रहे थे**। क्रिया शब्द ''सुधार रहे'' का अर्थ ''मरम्मत करना'' या ''ठीक करना'' है। मछुआरों के जालों की बात करें तो इस शब्द में जालों को साफ़ करना या इकट्ठा करना हो सकता है।

वचन केवल इतना कहता है कि **उस ने उन्हें बुलाया**। बेशक हमें यहां यह नहीं बताया गया कि उसने उन्हें क्या कहा, पर यह अनुमान देना तर्कसंगत है कि उसने उन्हें भी वही कहा होगा जो अन्य दो चेलों से कहा: ''मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा'' (4:19)। उनका उत्तर भी पतरस और अन्द्रियास के उत्तर वाला ही था: **वे तुरन्त ... उसके पीछे हो लिए**। उन्होंने मछली पकड़ने का अपना कारोबार, अपना घर बार और अपने परिवारों सहित उसके प्रेरित बनने के लिए, सब कुछ छोड़ दिया (19:27-30)।

पवित्र शास्त्र में केवल यहीं पर हमें याकूब और यूहन्ना का पिता **जबदी** मिलता है। उसके नाम का अर्थ है ''याहवेह का उपहार।'' उसकी पत्नी सलोमी यीशु की माता मरियम की बहन हो सकती है (27:56; मरकुस 15:40; यूहन्ना 19:25)। यदि ऐसा है तो यीशु याकूब और यूहन्ना का मौसेरा भाई था। यह शारीरिक सम्बन्ध हमें यह समझाने में सहायता कर सकता है कि वे फुर्ती से उसके पीछे क्यों चल पड़े और उनके पिता को आपत्ति क्यों नहीं लगी।

याकूब और यूहन्ना को उपनाम ''बुअनर्गिस'' दिया गया था जिसका अर्थ है ''गर्जन के पुत्र'' (मरकुस 3:17)। उनका तीखा और कठोर व्यवहार दिखाई दिया था, जब उन्होंने सामरिया नगर के ऊपर आकाश से आग गिरानी चाही थी, जिन्होंने यीशु को ठुकराया था (लूका 9:51-56)। याकूब और यूहन्ना को महत्वाकांक्षी भी दिखाया गया है। अपनी माता के द्वारा उन्होंने राज्य में प्रमुख स्थान पाने के लिए यीशु से विनती की थी (20:20-28; मरकुस 10:35-45)। यीशु के साथ समय बिताने से उनके जीवन बदल गए। यूहन्ना वही चेला है ''जिससे यीशु प्रेम करता है'' (यूहन्ना 13:23; 20:2; 21:7, 20-24) और याकूब प्रेरितों में शहीद होने वाला सबसे पहला बन गया (प्रेरितों 12:1, 2)।

गलील की आरम्भिक सेवकाई (4:23-25)

[23]और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी अराधनालायों में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

[24]सारे सीरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं, और मिर्गी वालों और लकवे के रोगियों को उसके पास लाए; और उसने उन्हें चंगा किया। [25]और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली

अब मत्ती गलील में यीशु की आरम्भिक सेवकाई की ओर मुड़ गया। उसने सुसमाचार के अपने पूरे विवरण में संक्षिप्त समीक्षाएं जोड़ दीं (4:23-25; 8:16, 17; 9:35; 12:15, 16; 14:14, 35, 36; 15:29-31; 19:1, 2; 21:14)।

आयत 23. यह **यीशु** के **गलील** में लगाए कई चक्करों में से पहला था (देखें 9:35-11:1; लूका 8:1-3), जो फलस्तीन के उत्तरी भाग में था (4:15 पर टिप्पणियां देखें)। उस इलाके में अन्य जातियों की बड़ी आबादी होने के बावजूद यह स्पष्ट था कि यीशु का **उपदेश** और प्रचार **आराधनालयों** में ही होता था (9:35; 12:9; 13:54), जो इस बात को नकारता है कि उसकी सेवकाई यहूदियों तक ही सीमित थी (10:5, 6; 15:21-28)।

वर्तमान में यह माना जाता है कि आराधनालय बाबुल की दासता के दौरान उपयोग में आए, चाहे उनका उल्लेख 200 ई.पू. के लगभग ऐतिहासिक दस्तावेज़ों में नहीं है।[14] वे यहूदी धार्मिक जीवन का केन्द्र थे। वे उस समय के "गिरजा घर" थे जहां लोग पढ़े गए वचन को सुनने और चर्चा करने के लिए सब्त के दिन इकट्ठा होते थे। मिशनाह के अनुसार जहां दस यहूदी पुरुष रहते थे वहां आराधनालय हो सकता था।[15] यरूशलेम के तालमुड का रिकॉर्ड है कि 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश से पूर्व, यरूशलेम में 480 आराधनालय उपयोग में लाए जा रहे थे[16]; बाबुल या बेबिलोन के तालमुड के अनुसार उनकी संख्या 394 थी।[17]

आदर्श आराधनालय नगर के केन्द्र में किसी पहाड़ी पर बनाया जाता था, जहां से यह आसानी से दिखाई दे सके।[18] तौभी ऐसा हर जगह सम्भव नहीं था। आराधनालय को सांस्कारिक रूप में आसान बनाने के लिए नदी या समुद्र के किनारे बनाने की एक और प्रवृति थी।

आराधनालय की प्रधानता "सरदार" (सरदारों) या "अधिकारी" (अधिकारियों) द्वारा की जाती थी (मरकुस 5:22; लूका 8:41; प्रेरितों 18:8, 17)। इन अगुओं की जिम्मेदारियों में आराधनाओं का प्रबन्ध करना और व्यवस्था को बनाए रखना होता था (लूका 13:14)। व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं में से पढ़े जाने के बाद आराधनालय का सरदार आम तौर पर मण्डली को सम्बोधित करने के लिए बाहर से आए रब्बी को बुलाता था (प्रेरितों 13:15; देखें लूका 4:16-27)। इसी प्रथा ने यीशु और उसके प्रेरितों को लोगों के सामने बोलने के अवसर दिए।

यीशु पवित्र शास्त्र से उपदेश देता था परन्तु वह **राज्य का सुसमाचार प्रचार** भी करता था। "सुसमाचार" शब्द का अर्थ है "खुशी की खबर।" यह आयत 17 वाला संदेश ही होगा:

‘‘मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।’’ राज्य चाहे अभी प्रगट नहीं हुआ था पर यह निकट ही था और शीघ्र आने वाला था, बल्कि उन में से कइयों के जीवन काल में ही आ जाना था जिनसे यीशु बातें कर रहा था (देखें मरकुस 9:1)। यीशु तब तक यह संदेश सुनाता रहा ‘‘जब तक वह ऊपर उठाया न गया’’ और वह ‘‘परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा’’ (प्रेरितों 1:2, 3)।

वह केवल उपदेश और प्रचार ही नहीं कर रहा था बल्कि वह **लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को** भी दूर कर रहा था। यीशु के आश्चर्यकर्म यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से उसे अलग करने के लिए थे। यूहन्ना ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया। यीशु हर प्रकार की बीमारी या रोग को ठीक कर सकता था, चाहे वह किसी भी कारण हो। पूर्णतया चंगाई देने की उसकी सामर्थ ने एक चिह्न का काम किया कि वह सचमुच में परमेश्वर की ओर से भेजा गया मसीहा है (11:2-6)।

आयत 24. इन आश्चर्यकर्मों के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में यीशु का नाम **सारे सीरिया देश में** फैल गया। पहली सदी में, ‘‘सीरिया’’ विशाल रोमी साम्राज्य के लिए इस्तेमाल होता था जिसमें पूरा फलस्तीन आता था (लूका 2:2)। चाहे कुछ लोगों का मानना है कि यहां दिया गया नाम केवल गलील के उत्तरी देश के लिए है पर लगता है कि इसमें 4:25 में वर्णित पूरा क्षेत्र आता था।

यीशु का नाम पूरे इलाके में फैल जाने के कारण लोग अपने बीमारों और दुर्बलों को उसके पास लाते थे जिसमें **दुष्टात्माओं से ग्रस्त, मिर्गी वालों** और **लकवे के रोगी** तक थे। इन विभिन्न प्रकार के लोगों का उल्लेख सम्भवतया केवल यह दिखाने के लिए है कि यीशु में हर प्रकार की स्थितियों और सामर्थ और चंगाई देने की उसकी क्षमता में किसी प्रकार की कोई सीमा नहीं थी।

आयत 25. यीशु की प्रसिद्धि का एक और परिणाम हुआ कि लोगों की भीड़ हर जगह उसके पीछे होने लगी। यह भीड़ केवल **गलील** से ही नहीं बल्कि फलस्तीन के सारे भागों में से होती थी।

दिकापुलिस यरदन के पार का जिला था जो अपने यूनानी नाम के अर्थ के अनुसार दस नगरों वाला था। यूनानी भाषा बोलने वाले इन नगरों को बड़े प्लाइनी द्वारा दमिश्क, फिलाडेल्फिया, रफ़ाना, शितोपुलिस (बैतशियन), गदरा, हिप्पोस, दियोन, पेला, गिरासा, और कनाथा बताया गया है।[19] पूरे दिकापुलिस को मूल यूनानी संस्कृति को बनाए रखने में सहायता के लिए सिकन्दर महान की सेना के पूर्व सैनिकों की आबादी मानी जाती है। शितोपुलिस को छोड़ जो यरदन के पश्चिम में था, ये नगर यरदन के पूर्व में थे।

यीशु की सुनने के लिए दूर दूर से आई भीड़ पर ज़ोर देने को जारी रखते हुए मत्ती ने **यरूशलेम यहूदिया** और **यरदन नदी के पार** के इलाके का उल्लेख किया (‘‘यरदन के पार का इलाका’’; NIV)। यह अन्तिम वाक्यांश पिरिया के सम्बन्ध में है।

❖❖❖❖❖ सबक ❖❖❖❖❖

खोए हुओं तक पहुंचने के लिए परमेश्वर की योजना: प्रचार करना (4:12-25)

बपतिस्मा लेने और परीक्षाओं के बाद यीशु ने प्रचार करने, उपदेश देने और चंगाई देने से गलील में अपनी सेवकाई आरम्भ की। उसने कुछ मछुआरों को अपने चेले बनने के लिए भी बुलाया। अपने वचन पाठ से हमें तीन महत्वपूर्ण सबक मिलते हैं:

1. खोई हुई मनुष्यजाति के पास पहुंचने की परमेश्वर की योजना वचन का प्रचार करना है (4:12–17)।
2. हमें उन लोगों के स्थानों को भरना है जो हम से पहले हुए हैं (4:12, 17)।
3. हमें परमेश्वर की योजना को चलता रखने के लिए अपने स्थान पर दूसरे लोगों को चुनकर उन्हें प्रशिक्षण देना आवश्यक है (4:18–22)।
4. हमें उस पर ध्यान देना ज़रूरी है जिसे यीशु ने अपने प्रचार में महत्वपूर्ण माना (4:17, 23)।
5. हमें वास्तविक आश्चर्यकर्मों और आज के ढोंगियों के कथित प्रयासों के बीच अन्तर को समझना आवश्यक है (4:23, 24)।

टिप्पणियां

[1] लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 80. [2]मत्ती 13:53–58 तक नासरत में यीशु के ठुकराए जाने की बात नहीं बताता। [3]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1–13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 73. [4]जोसेफस *लाइफ* 45; *वार्स* 3.3.2. [5]जोसेफस *लाइफ* 17. [6]जैक पी. लूईस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 74. [7]हैग्नर, 76. [8]मिशनाह *अबोथ* 1.16. [9]यीशु के मछुआरों को बुलाने और एलिय्याह के एलीशा को अपने खेत और परिवार से बुलाने के बीच समानताओं पर ध्यान दें (1 राजाओं 19:19–21)। [10]लूईस, 74.

[11] द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संपा. जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1939), 4:2349 में जेम्स एम. ग्रे, ''पीटर, साइमन।'' [12]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इन्टरप्रिटेशन (लूईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 31. जाल के दृष्टांत में (13:47–50) स्वर्गदूत अच्छी मछलियों (विश्वासी लोगों) को बुरी मछलियों (अविश्वासी लोगों) से अलग करने के लिए जिम्मेदार हैं। [13]सुज़ेन डी डायरिच, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* अनु. डोनल्ड जी. मिल्लर, लेमैन'स बाइबल कमैंट्री, अंक 16 (रिचमंड, वर्जीनिया: जॉन नॉक्स प्रैस, 1961), 26.[14]इक्लेसियेसिटकस 51:23. [15]मिशनाह *मेगिल्लाह* 1.3; 4.3; सन्हेद्रिन 1.6; अबोथ 3.6. [16]जरूसलेम तालमुड *मेगिल्लाह* 3.1. गेमारा के साथ (मिशनाह का एक विशलेषण) से उद्धरणों को (1) द जरूसलेम तालमुड और (2) द बेबिलोनियन तालमुड (जिसे इस टीका में ''तालमुड'' कहा गया है) में इकट्ठे दोहराया गया। [17]तालमुड *केटुबोथ* 105ए। [18]तालमुड *शब्बथ* 11ए। [19]प्लाइनी *नेचुरल हिस्ट्री* 5.16.74.